यह प्रवाह बना रहे

मध्यप्रदेश में एक जिले के पत्रकारों ने सरकार के कार्यक्रमों का कवरेज न करने का निर्णय किया और उसे अधिक पत्रकारों के मान लेने पर खुशी भी जाहिर की। ऐसा करने का निर्णय एक कार्यक्रम में कुछ ही पत्रकारों को आमंत्रित करने पर किया गया। इस तरह के निर्णय पहले भी कई स्थानों पर लिये जाते रहे हैं। बहुत से पत्रकार संगठन भी इस तरह के निर्णयों के पक्ष में समर्थन देते रहे हैं। सुविधा, सुरक्षा, सम्मान, सम्मान- निधि, आवास, पेंशन, स्वास्थ्य तथा चिकित्सा का लाभ आदि ऐसी अनेक मांगें हैं जो निरंतर की जाती रहीं हैं और शासन-प्रशासन भी इनके बारे में कहीं आश्वस्त करता रहा है, तो कहीं कुछ निर्णय भी लेता रहा है। यह सब होना भी चाहिये क्योंकि हम कल्याणकारी राज्य व्यवस्था में हैं जिसका लक्ष्य सभी नागरिकों की सुविधा, सुरक्षा और कल्याण है। यह भी कमोवेश सच ही ह, कि संगठित कर्मचारियों, अधिकारियों ने इस तरह कि मांग पत्रकारों से बहुत पहले से की और उसके लिए आंदोलन भी किये। आंदोलन का फल भी मिला। लगभग उसी तर्ज पर सेवा के क्षेत्र में आये रजनीतिक कार्यकर्ताओं, विधायक और सांसदों ने भी अपने लिए स्वयं ही निर्णय लिये और अब भी ले रहे हैं। सेवा के अन्य क्षेत्रों में भी इस आशय की मांग अब कोई नई बात नहीं रही। यानी जो भी संगठित हैं वह अपने संगठन का बल इस सबके लिए लगातार वह सब पा रहा है जो सामान्य नागरिक और असंगठित लोगों के लिए भी होना चाहिये था।

बात दरअसल पत्रकारों से प्रारंभ हुई थी। पत्रकारिता का उपयोग करने वालों का मकसद पत्रकारिता करने वाले लोगों से अलग है। पत्रकारिता लोगों को जानकारियां और विचार देती है, उनका सकारात्मक मनोरंजन करती है। उसका प्रारंभ लोगों को अपने विचार तथा संस्कृति से परिचित कराने के साथ ही जागरूक करने के लिए हुआ था। वह सेवा के लक्ष्य से प्रारंभ हुई। समय बदलने के साथ उसमें परिवर्तन आया तो है पर इस व्यवसाय केन्द्रित समय में भी उसे सेवा के लिए ही जाना पहचाना जाता है। सच यह भी है कि अब खबरों और विचारों का व्यवसाय हो रहा है। फिर भी व्यवसाय करने वाले लोग यह सब करते हुए मुखौटा तो सेवा का ही लगाकर रखते हैं। इसलिए कि लोग मीडिया या पत्रकारिता को अब भी व्यवसाय मानने के लिए राजी नहीं होंगे। समाचारपत्रों और चैनलों ने इसका अनुभव कर लिया है। लोग उनके छिपे एजेंडा को पहचान

गये हैं और उनसे किनारा कर लिया। इस तथ्य को किसी भी जानकार से पूछा और समझा जा सकता है।

मीडिया अब अगर खबरों और विचारों के व्यवसाय में है तो फिर अधिक कुछ नहीं कहना है। मीडिया में भी दो वर्ग तो हैं ही। एक वे जो मीडिया का प्रबंधन और प्रकाशन करते हैं। दूसरे वे जो लोगों तक लोगों के हितों की जानकारी पहुंचाते हैं। यह दूसरा वर्ग ही तो पत्रकार है। पहले वर्ग के मूल्य अब व्यवसाय आधारित हैं। अपने मुनाफे के लिए वह मानवीय मूल्यों के साथ व्यावसायिक मूल्यों को इस सफाई के साथ रखता है कि जिससे व्यावसायिक मूल्य दिखाई न दें। पर क्या पत्रकार भी अपना नाता इसके साथ ही व्यावसायिक मूल्यों के साथ जोड़ने के लिये पूरी तरह से तैयार हो चुका है। वह भी अपने स्वार्थ, सुविधा, सुरक्षा, लाभ आदि के लिए ही जानकारियों तथा विचारों के प्रस्तुत करने के लिए ही पत्रकारिता के नाम पर अपना काम कर रहा है। ऐसा है, तो फिर चर्चा का यह प्रसंग व्यर्थ हो गया है। यदि ऐसा नहीं है तो विमर्श करना ठीक है। व्यावसायिक मूल्य का गठजोड़ मुनाफे, सुविधा, सुरक्षा, वित्त पोषण आदि के साथ जुड़ा रहता है। उस मूल्य में तरलता तथा लचीलापन रहता है। यह सब न हो तो व्यवसायी संगठन बल से उन्हें प्राप्त करता है। आप याद करें, औद्योगिक क्षेत्रों के लिए कब्जा की गई जमीनों का मुआवजा क्या बाजार दर पर कहीं भी दिया गया है। बैंकों के हजारों करोड़ रूपये क्या गरीब नागरिकों को दिये गये कर्ज के रहे हैं या यह डूबन्त राशि व्यवसाय से जुड़े लोगों की रही है। आयकर विभाग लगभग हर दो-चार वर्षों में काले धन को घोषित करने और उसे सफेद धन में बदलने की क्रिया किस वर्ग के लिए करता है। यही बात बिल्डर, ठेकेदार एवं अन्य उत्पादनों के लोगों के लिए कही जा सकती है। इस सबके लिए कानून-नियम का लचीला हो जाना व्यवसाय के लिए जरूरी माना जाता है। इस सब के हितों के लिए सुविधाजनक नये नियम-कानून बनाये जा सकते हैं । पर यही सिध्दांत क्या सत्य-तथ्य पर आधारित जानकारियों के बारे में स्वीकार होगा। क्या हम लोगों के विकास, हित और हक के संबंध में भी विज्ञापनी खबरों को देकर अपना मुख उजला अनुभव कर सकेंगे। संभवत: नहीं।

एक बात और। हम सुविधाओं, सुरक्षा और लाभों के आधार पर खबरों को देने के लिए नहीं हैं। हम खबर को व्यवसाय नहीं हैं। वे लोगों को अपने समाज और उसके नियमन-प्रबंधकों की कार्रवाहियों को बताने और समझाने के लिए हैं। हमें सुविधा, सुरक्षा आदि मिले वह सब एक

कल्याणकारी रज्य का कर्तव्य है। वह हमारी मांग भी हो सकती है, पर वह खबर के एवज में नहीं हो सकती। खबर के एवज में होगी तो वह व्यवसाय ही होगा और तब आप भी व्यवसायी होंगे।

इस अंतर को समझें और इस अंतराल को सुविधाओं से भरने की शर्त से गुरेज करें। ऐसा हुआ है, अब भी हो रहा है कि प्रबंधक, प्रशासक, सियासतदार आदि अपनी कारगुजारियों को छिपाते हैं और हम तमाम कठिनाइयों, बाधाओं और संकटों में पड़कर उस छिपे तथ्य को उजागर करते हुए उस उजागरी को अपने घावों पर मरहम की तरह अनुभव करते हुए सिसकारी भी नहीं लेते हैं। समाज भी ऐसे लोगों के भाल पर तिलक लगाकर खुश ही होता है। हम भी ऐसा करते हुए मूल्यों की विरासत में मिली परम्परा का निर्वाह कर रहे होते हैं और चाहते हैं कि परम्परा का यह प्रवाह बना रहे।